International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 7.924 Volume 12, Issue 07, July 2025
Website- www.aarf.asia, Email: editoraarf@gmail.com

'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में सामाजिक विज्ञान की कक्षा 6 की पाठ्यपुस्तक *'समाज का अध्ययन: भारत और उसके आगे '* का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. विश्वास[1] एवं डॉ नविन्द्रा बाई[2]

शोध-सार

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF-SE) 2023 की अनुशंसाओं के अनुपालन में नई पाठ्यपुस्तकों का निमार्ण किया गया है। इसी क्रम में कक्षा 6 की सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तक समाज का अध्ययनः भारत और उसके आगे का निमार्ण भी किया गया है। यह पाठ्यपुस्तक पांच उप-विषयों के अन्तर्गत 14 अध्यायों में विभाजित की गई है। इसमें कुछ नये अनुभाग शामिल किये गये हैं, जो उन सिद्धान्तों का क्रियान्वयन है जिन्हें राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF-SE) 2023 में सुझाया गया है। कक्षा 6 के स्तर पर पूर्व में लागू 3 पाठ्यपुस्तकों के स्थान पर 240 पृष्ठों की एकमात्र पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों में ज्ञान, दक्षताएं, मूल्यों एवं व्यवहार के परिमार्जन में कितनी सहायक है; इसकी पड़ताल करना इस आलेख का ध्येय है। इस ध्येय को ध्यान में रखते हुए विश्लेषकों द्वारा इस पाठ्यपुस्तक का विश्लेषण राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF-SE) 2023 के मानदंड़ों के आधार पर किया गया है। यह विश्लेषण कुछ महत्वपूर्ण मानदंड़ों यथा-पाठ्यपुस्तक का भौतिक पक्षः आवरण पृष्ठ, अक्षरों का आकार, चित्रों की गुणवत्ता, चित्रण, रंग, भाषा, आदि, सामाजिक-भावनात्मक, अधिगम कौशल एवं जीवन कौशल, 21वीं शताब्दी के कौशल, बहु-अनुशासनात्मक और अंतः-अनुशासनात्मक प्रकृति एवं पाठ्यपुस्तक का समग्र गठन के आधार पर किया गया है।

बीज शब्द - *सामाजिक-भावनात्मक कौशल, जीवन कौशल, 21वीं शताब्दी के कौशल, बहु-अनुशासनात्मक एवं अंतःअनुशासनात्मक उपागम*

[1] सहायक आचार्य, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (NCERT), मैसूरू- 570006

[2] सहायक आचार्य, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (NCERT), मैसूरू- 570006

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

प्रस्तावना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक ऐसे भारतीय समाज की परिकल्पना करती है, जो जीवंत ज्ञान समाज के रूप में जाना जाये। यह नीति, जिस समाज के निमार्ण के स्वप्न को साकार करना चाहती है, उसका आधार संवैधानिक होने के साथ-साथ सांस्कृतिक भी है। इसी क्रम में वैश्विक मूल्यों से परिपूर्ण वैश्विक नागरिक के निमार्ण की परिकल्पना भी की गई है, जिसके लिए शिक्षा एक महत्वपूर्ण साधन है। चूंकि शिक्षा का वर्तमान स्तर एवं रूप ऐसा नहीं है, जो होना चाहिए; इसलिए शिक्षा *साधन* होने के साथ-साथ *साध्य* भी है।

इसी अपेक्षा में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने विद्यालयी शिक्षा की संरचना में बदलाव कर नई संरचना 5+3+3+4 की अनुशंसा की है। इसमें पहले पांच वर्ष की शिक्षा को आधारभूत स्तर, फिर तीन-तीन वर्षो की शिक्षा को क्रमशः प्रारम्भिक स्तर, मध्य स्तर तथा विद्यालयी स्तर की अंतिम चार वर्षों की शिक्षा को माध्यमिक स्तर कहा गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की अनुशंसाओं को ध्यान में रखते हुए कक्षा दो से बाहरवीं तक की कक्षाओं के लिए *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF-SE) 2023* तैयार की गई है। इसी क्रम में विद्यालयी शिक्षा के लिए नई पाठ्यपुस्तकों का निर्माण भी किया जा रहा है, जिसके अन्तर्गत राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद द्वारा कक्षा 3 एवं कक्षा 6 की नई पाठ्यपुस्तकों का निमार्ण किया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 विद्यालयी शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों के सम्पूर्ण के लिए जिन उद्देश्यों (तर्कसंगत विचार और स्वतंत्र सोच/स्वायत्तता, शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य, लोकतांत्रिक और सामुदायिक भागीदारी, आर्थिक भागीदारी और सांस्कृतिक भागीदारी) की प्राप्ति करना चाहती है, उसके लिए सामाजिक विज्ञान एक आवश्यक विद्यालयी विषय है; क्योंकि सामाजिक विज्ञान की प्रकृति व्यक्ति एवं समाज के ताने-बाने को जानने-समझने की है। इसके साथ-साथ सामाजिक विज्ञान विषय की आदर्श वैश्विक नागरिक निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 विषयवस्तु को इष्टतम स्तर पर प्रयुक्त करने की पैरवी करती है।

इसे ध्यान में रखते हुए पूर्व में प्रचलित कक्षा 6 के स्तर पर सामाजिक विज्ञान विषय की तीन अलग-अलग पाठ्यपुस्तकों के स्थान पर 240 पृष्ठों की एकमात्र पाठ्यपुस्तक का निमार्ण इसी वर्ष 2024 में किया गया, जिसका हिन्दी संस्करण सितम्बर 2024 में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् द्वारा प्रकाशित किया गया है। इस पाठ्यपुस्तक की विषयवस्तु को कुल 14 अध्यायों में बांटा गया है। ये अध्याय कुल पांच उप-विषयों के अंतर्गत दिए गए हैं। पाठ्यपुस्तक के ये पांचों उप-विषय विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF-SE) 2023 में सामाजिक विज्ञान की विषयवस्तु के लिए सुझाये गये चार उप-विषयों पर आधारित हैं। नीचे दी गई तालिका के माध्यम से इसे समझा जा सकता है-

पाठ्यपुस्तक *समाज का अध्ययन: भारत और उसके आगे* में दिए गए		**NCF-SE, 2023 में दिए गए**
अध्याय	**उप-विषय**	**उप-विषय**
1. पृथ्वी पर स्थानों की स्थिति	भारत एवं विश्व: भूभाग एवं उनके निवासी	मानव-पर्यावरण अंत:संबंध और अंत:क्रिया
2. महासागर एवं महाद्वीप		
3. स्थलरूप एवं जीवन		
4. इतिहास की समय-रेखा एवं उसके स्रोत	अतीत के चित्रपट	लोग एवं संस्कृतियां
5. इंडिया अर्थात् भारत		
6. भारतीय सभ्यता का प्रारम्भ		
7. भारत की सांस्कृतिक जड़े	हमारी सांस्कृतिक विरासत एवं ज्ञान परंपराएं	
8. विविधता में एकता या 'एक में अनेक'		
9. परिवार और समुदाय	शासन और लोकतंत्र	लोकतंत्र एवं शासन
10. आधारभूत लोकतंत्र-भाग1 : शासन		
11. आधारभूत लोकतंत्र-भाग2 : ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानीय सरकार		
12. आधारभूत लोकतंत्र-भाग3 : नगरीय क्षेत्रों में स्थानीय सरकार		
13. कार्य का महत्व	हमारे आस-पास का आर्थिक जीवन	लोगों की आजीविका
14. हमारे आस-पास की आर्थिक गतिविधियां		

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF-SE) 2023 द्वारा तय किये गये मानदण्डों के आधार पर तैयार की गई कक्षा 6 की सामाजिक विज्ञान की इस पाठ्यपुस्तक *समाज का अध्ययन: भारत और उसके आगे* का विश्लेषण करने का प्रयास इस आलेख में किया गया है।

पाठ्यपुस्तक के विश्लेषण हेतु निर्धारित मानदंड़

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF-SE) 2023 की अनुशंसाओं के आधार पर मुख्य मानदंड निम्नलिखित है-

- पाठ्यपुस्तक का भौतिक पक्ष
- अक्षरों का आकार, चित्रों की गुणवत्ता, चित्रण, रंग, भाषा, आदि
- संवैधानिक, वैज्ञानिक, मानवीय मूल्य एवं आचार
- 21वीं सदी के कौशल
- सामाजिक-भावनात्मक, अधिगम कौशल एवं जीवन कौशल
- भारतीय ज्ञान प्रणाली- प्राचीन एवं शाश्वत
- भारतीय मौलिकता, भारतीय संस्कृति, बहु-भाषा एवं बहु-धार्मिक समाज
- उभरती हुई शिक्षण विधियां- अनुभवात्मक, कला-एकीकृत, खेल-एकीकृत, कहानी सुनना आदि

- बहु-अनुशासनात्मक एवं अंतःअनुशासनात्मक प्रकृति
- एन.ई.पी. एवं एन.सी.एफ. के क्रॉसकटिंग विषय
- संकल्पनात्मक समझ एवं संकल्पनात्मक शुद्धता
- गतिविधियों की प्रासांगिकता एवं पर्याप्तता
- सतत् विकास
- सीखने के संसाधन
- समग्र आकलन, 360 डिग्री बहुविध तरीके
- पाठ्यपुस्तक का समग्र गठन

पाठ्यपुस्तक के विश्लेषण का सीमांकन

प्रत्येक कार्य की अपनी-अपनी कुछ सीमाएं होती हैं। कक्षा 6 की सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तक *समाज का अध्ययनः भारत और उसके आगे* का विश्लेषण करते समय विश्लेषकों को भी विभिन्न अपरिहार्य कारणें के चलते कुछ सीमाओं में बंधना पड़ा। इसलिए विश्लेषकों द्वारा इस पाठ्यपुस्तक का विश्लेषण करने के लिए उपर्युक्त मानदंड़ों में से कुछ मानदंड़ों के आधार पर ही पाठ्यपुस्तक का विश्लेषण किया गया है। जिन मानदंड़ों के आधार पर इस पाठ्यपुस्तक का विश्लेषण किया गया है, वें निम्नलिखित है-

- पाठ्यपुस्तक का भौतिक पक्षः आवरण पृष्ठ
- अक्षरों का आकार, चित्रों की गुणवत्ता, चित्रण, रंग, भाषा, आदि
- सामाजिक-भावनात्मक, अधिगम कौशल एवं जीवन कौशल
- 21वीं शताब्दी के कौशल
- बहु-अनुशासनात्मक और अंतः-अनुशासनात्मक प्रकृति
- पाठ्यपुस्तक का समग्र गठन

पाठ्यपुस्तक का भौतिक पक्षः आवरण पृष्ठ

कक्षा 6 की सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तक का शीर्षक *समाज का अध्ययनः भारत और उसके आगे* भारत को एक समाज के रूप में देखने और खोजने के लिए प्रेरित करता है। पुस्तक के आवरण पृष्ठ पर हिमालय पर्वत श्रंखला, तराई क्षेत्र में बहती नदी, नदी में खड़ी महिलाएं, एवं वनस्पति के रूप में दिखाये गये पेड़-पौधे पाठ्यपुस्तक के उप-विषय ***भारत एवं विश्वः भूभाग एवं उनके निवासी*** को प्रतिबिम्बित करते हैं। इसके आवरण पृष्ठ पर भारत की पुरातन महान सिंधु घाटी सभ्यता से प्राप्त मोहर और शान्ति के प्रतीक सांची स्तूप के द्वार को दर्शाया गया है, जो पुस्तक के उप-विषय ***अतीत के चित्रपट*** से संबंधित है। जबकि गुरू के सानिध्य में शिक्षार्थ होते शिष्यों का समूह,

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

पुस्तक के उप-विषय ***हमारी सांस्कृतिक विरासत एवं ज्ञान परंपराएं*** का प्रतिनिधित्व करता है। इसके साथ ही महिलाओं का एक समूह दर्शाया गया है, जो देश के लगभग सभी क्षेत्रों (यथा पूर्वोत्तर, पश्चिम एवं दक्षिण क्षेत्र आदि) का प्रतिनिधित्व करती हुई प्रतीत हैं। महिलाओं के इस समूह के द्वारा उनका लोकतंत्र में समावेशन प्रस्तुत किया गया है। यह समूह अपने विचारों को स्वच्छन्दता से प्रकट करता हुआ प्रतीत हो रहा हैं, जो पाठ्यपुस्तक के उप-विषय ***शासन एवं लोकतंत्र*** को द्योतक है। आवरण पृष्ठ पर मैदानी भू-भाग पर कृषि करते कृषक एवं एक ट्रैक्टर को चित्रित किया गया है, जो भारत की आर्थिक व्यवस्था का प्राथमिक क्षेत्र है। जिसके द्वारा उप-विषय ***हमारे आस-पास का आर्थिक जीवन*** को भी पाठ्यपुस्तक के आवरण पृष्ठ पर स्थान दिया गया है। पाठ्यपुस्तक के पीछे के आवरण पृष्ठ पर एक गोंड कला का चित्र दर्शाया गया है, जो भारतीय जनजातिय संस्कृति का प्रतीक है। इसके माध्यम से समाज के हाशिये पर रहने वाले जनजातिय समूह को भी मुख्य धारा में सम्मिलित करने का एक प्रयास किया गया है।

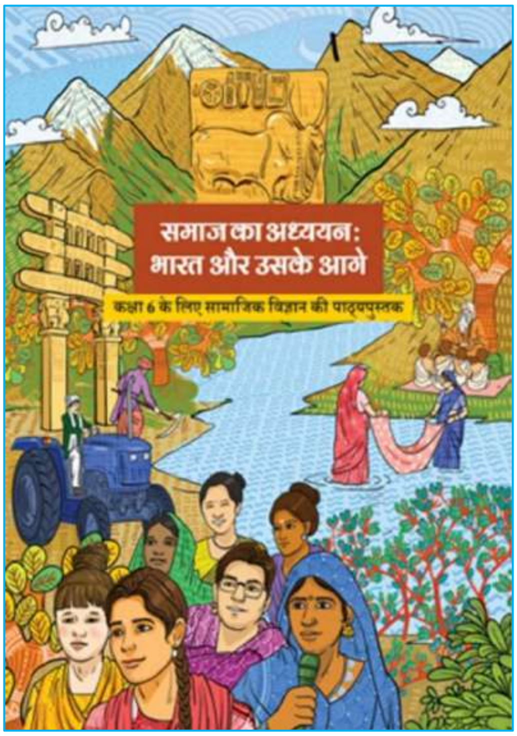

अक्षरों का आकार, चित्रों की गुणवत्ता, चित्रण, रंग, भाषा, आदि

पाठ्यपुस्तक की विषयवस्तु में दिये गये अध्याय के शीर्षक, अध्याय के अन्तर्गत आने वाले मुख्य बिन्दुओं एवं अध्याय में दिये गये विभिन्न अनुभागों के शीर्षकों के अक्षरों का आकार उसकी महत्ता के आधार पर दिया गया है। इसके साथ ही अध्याय की विषयवस्तु के अक्षर समुचित आकार में प्रकाशित किये गये हैं, जो कक्षा 6 के विद्यार्थियों के लिए सरलता से पढ़े जा सकने योग्य हैं। अध्यायों में जिन तकनीकी शब्दों की व्याख्या, अध्यायों के दौरान पृष्ठ के हाशिये पर दी गई है, उन शब्दों को मुख्य विषयवस्तु में बोल्ड एवं अलग रंग से दर्शाया गया है और उसकी व्याख्या उसी रंग में दी गई है। इन तकनीकी शब्दों का रंग उप-विषयों (Themes) के अनसार दिया गया है, जो तकनीकी शब्दों की उप-विषयों से तारतम्यता को बनाती है। पाठ्यपुस्तक में दिये चित्र विषयवस्तु की संकल्पना को प्रदर्शित करने में सक्षम प्रतीत होते हैं। इनका आकार भी आवश्यकतानुसार रखा गया है। कुछ चित्र पूरे पृष्ठ पर, कुछ आधे पृष्ठ पर, जबकि कुछ चित्र एक चौथाई पृष्ठ पर दिये गये हैं, जो अध्याय की विषयवस्तु एवं अध्याय के विभिन्न अनुभागों से जुडे हुए हैं। ये चित्र पाठ्यपुस्तक में दी

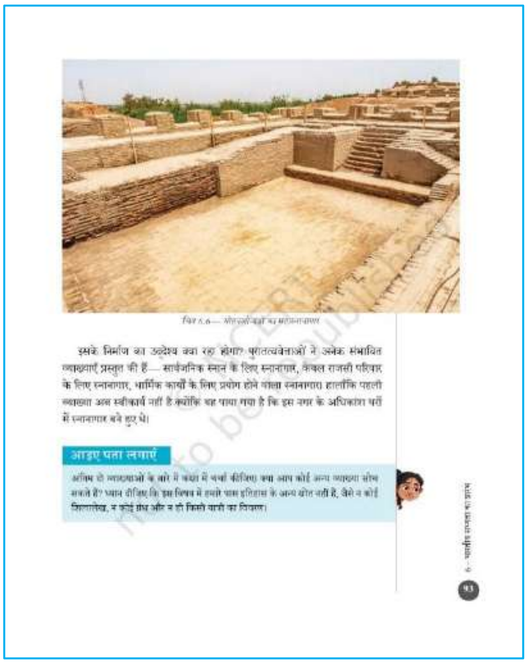

गई संकल्पनाओं को समझने के संसाधन के रूप में दिये गये हैं। जिनमें कुछ चित्र विद्यार्थियों की अवलोकन क्षमता को विकसित करने के साथ-साथ आकलन करने में भी सहायक हैं। यें चित्र आकर्षक, स्पष्ट, एवं रंगो से समृद्ध हैं। उदाहरणार्थ अध्याय संख्या 6 *भारतीय सभ्यता का प्रारम्भ* के पृष्ठ संख्या 92-95 पर दिये गये सिन्धु सभ्यता से प्राप्त अवशेषों के चित्र स्पष्टता के साथ-साथ समुचित आकार में दिये गये हैं, जो विद्यार्थियों को प्राचीन भारत की समृद्धता को समझने में सहायक हैं। इस पाठ्यपुस्तक में दिये गये कुछ चित्र वास्तविक है, जबकि कुछ चित्र कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) द्वारा तैयार किये गये हैं। पाठ्यपुस्तक में कुछ चित्र ऐसे भी दिये गये जो दुर्लभ हैं और आमजन की पहुंच से बाहर हैं, उदाहरणार्थ चित्र संख्या 6.5, 6.7, एवं 6.8; क्रमशः प्रसिद्ध पुरातत्वविद् डॉ. आर. एस. बिष्ट, ए.एस.आई और मिशेल डैनिनों के सौजन्य से शामिल किये गये हैं।

पाठ्यपुस्तक में सरल एवं सुगम्य भाषा का प्रयोग किया गया है। संकल्पना के प्रति बेहतर समझ विकसित करने की दृष्टि से कई अध्यायों में हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों शब्दों का एक साथ प्रयोग किया गया है। उदाहरणार्थ अध्याय संख्या 01 *पृथ्वी पर स्थानों की स्थिति* के पृष्ठ संख्या 14 पर *अंशों के साथ डिग्री*, *देशांतरीय याम्योत्तर* के साथ *मेरिडियन ऑफ लागिट्यूड* एवं अध्याय संख्या 04 *इतिहास की समय-रेखा एवं उसके स्त्रोत* के पृष्ठ संख्या 62 पर *ग्रेगोरियन कैलेंडर* के साथ *तिथिपत्र* शब्दों को भी दिया गया है। इस पाठ्यपुस्तक में हिन्दी से इतर भाषा के मूल शब्दों का यथापूर्वक देवनागरी लिपि में प्रयोग किया गया है, उदाहरणार्थ अध्याय संख्या 13 *कार्य का महत्व* के पृष्ठ संख्या 184 पर *सॉफ्टवेयर इंजीनियर*, *कम्प्यूटर एप्लीकेशन* एवं *कम्पनी* । इस तरह पाठ्यपुस्तक में बहु-भाषिकता को प्रोत्साहन दिया गया है।

पाठ्यपुस्तक के अन्त में एक शब्दावली दी गई है, जिसमें शब्दों की हिन्दी में व्याख्या के साथ-साथ उस शब्द का अग्रेंजी अनुवाद भी दिया गया है, जो विद्यार्थियों के शब्द भण्डार में वृद्धि करने में उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

सामाजिक-भावनात्मक, अधिगम कौशल एवं जीवन कौशल

इस पाठ्यपुस्तक में उपरोक्त कौशलों के विकास के अवसर कई अध्यायों में उपलब्ध है। उदाहरणार्थ अध्याय 4 *इतिहास की समय-रेखा एवं उसके स्त्रोत* के पृष्ठ संख्या 71 पर *पहली उपज* शीर्षक के अर्न्तगत सामुदायिक कल्याण की संकल्पना पर चर्चा के दौरान शिक्षक विद्यार्थियों से कुछ ऐसे बिन्दुओं यथा समुदाय का निर्माण किन-किन आवश्यकताओं के चलते होता है, समुदाय के व्यक्तियों के मध्य आपसी जुड़ाव के क्या-क्या आधार हो सकते हैं, समुदाय में लोग एक-दूसरे का सहयोग क्यों करते हैं, तथा क्या आपने (विद्यार्थियों ने) अपने समुदाय में किसी को

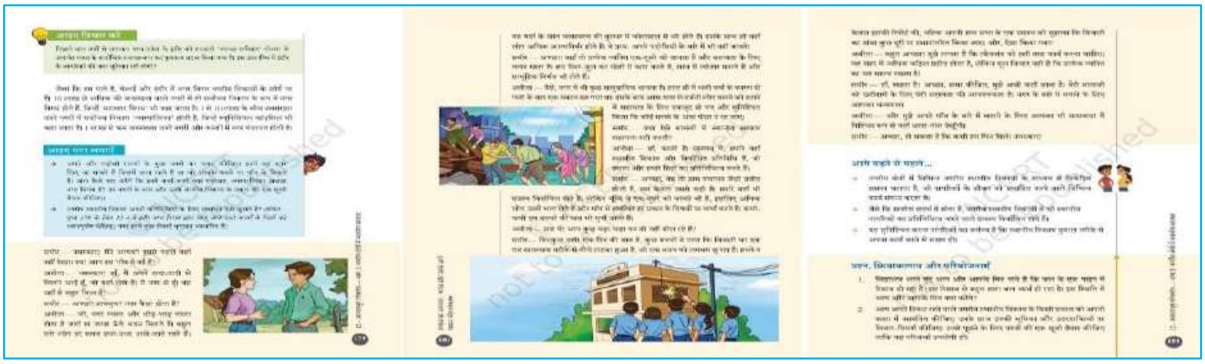

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

कल्याणकारी कार्य करते हुए देखा है; पर परिचर्चा के दौरान विद्यार्थियों में सामुदायिक कल्याण जैसे सामाजिक-भावनात्मक कौशल का विकास किया जा सकता है। वहीं अध्याय संख्या 12 *नगरीय क्षेत्रों में स्थानीय सरकार* के पृष्ठ संख्या 179-181 पर दो पात्रों समीर एवं अनीता के मध्य संवाद दिया गया है। इसमें अनीता शहर की निवासी है, जबकि समीर ग्रामीण पृष्ठभूमि से जुड़ा है। संवाद में समीर अनीता से उसके बारे में जानने के लिए प्रश्न पूछता है, जिसके उत्तर में अनीता कहती है कि वह नगर से आई है और नगर, गांव से भिन्न होता है। तब समीर अनीता से प्रश्न करता है कि नगर कैसा होता है। इस पर अनीता उसे नगर के बारे में बताती है, फिर समीर उसे गावं के बारे में बताता है। इस प्रकार वें संवाद के दौरान एक-दूसरे से नगर एवं गाँव की जानकारी साझा करते हैं। पाठ में दिये गये, इस संवाद का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए शिक्षक, कक्षा के विद्यार्थियों को अपने सहपाठियों, परिजनों, व पड़ौसियों से बातचीत करके एवं उनके अच्छे व्यवहार का अवलोकन करके सीखने के लिए प्रेरित कर सकता है। शिक्षक, पुस्तक के इस पाठ के माध्यम से विद्यार्थियों में संप्रेषण एवं आस-पास के अवलोकन की अभिवृत्ति का संवर्धन करके उनमें अधिगम कौशल का विकास कर सकता है। पुस्तक के अध्याय संख्या 09 *परिवार एवं समुदाय* के पृष्ठ संख्या 140-141 पर उल्लेखित लघुकथा में शालिनी नामक एक बालिका है, जिसके चाचा आर्थिक संकट से गुज़र रहे हैं। ओणम के त्यौहार पर उसके पिता शालिनी की इच्छानुसार उसके लिए रेशमी वस्त्र लाना चाहते थे, परन्तु शालिनी की दादी ने उसके पिता से चाचा के परिवार के लिए भी नये वस्त्र लाने के लिए कहा। इस परिस्थिति में शालिनी को रेशमी वस्त्रों के जगह सूती वस्त्रों से ही संतोष करना पड़ा। दादी ने शालिनी को समझाया कि परिवार में संकट के समय सभी एक-दूसरे की सहायता करते हैं। उनके पास जो कुछ भी होता है, उसे वें एक-दूसरे से साझा करते हैं।

इस लघुकथा के माध्यम से विद्यार्थियों में पारस्परिक सम्बंध बनाये रखना एवं समानुभूति के महत्वपूर्ण जीवन कौशलों का विकास किया जा सकता है। वहीं इस लघुकथा के पश्चात् *आइए पता लगाएं* अनुभाग में दिये गये एक प्रश्न 'यदि आप शालिनी की जगह होते तो क्या करते?' के माध्यम से विद्यार्थियों में निर्णयन कौशल का विकास करने के अवसर भी उपस्थित हैं।

21वीं शताब्दी के कौशल

इस पाठ्यपुस्तक में अध्यायों के साथ दिये गये विभिन्न अनुभागों यथा *महत्वपूर्ण प्रश्न*, *आइए पता लगाएं*, *आइए विचार करें*, *प्रश्न*, *क्रियाकलाप एवं परियोजनाएं* के माध्यम से 21वीं शताब्दी के विश्लेषणात्मकता, सृजनात्मकता, सम्प्रेषण एवं आपसी सहयोग जैसे कौशलों को विकसित करने के अनेक अवसर उपस्थित हैं। उदाहरणार्थ पुस्तक के अध्याय संख्या 6 *भारतीय सभ्यता का प्रारम्भ* के पृष्ठ संख्या 94-95 पर *जल प्रबंधन* नामक शीर्षक के अन्तर्गत यह बताया गया है कि हड़प्पावासी किस प्रकार जल प्रबंधन एवं स्वच्छता को महत्व देते थे। इस शीर्षक में हड़प्पावासियों ने जल से जुड़ी विभिन्न व्यवस्थाओं, यथा-उनके घरों में अलग से स्नानागार हुआ करते थे, अपशिष्ट जल प्रबंधन के लिए नगर में भूमिगत जल-निकास प्रणाली का प्रबंध था, पेयजल के लिए ईंटों से बने कुओं का निर्माण किया गया था तथा जल संचयन के लिए मानव निर्मित जलाशय बनाये गये थे; बताया गया है। इस चर्चा के पश्चात् पाठ में पृष्ठ संख्या 96 पर *आइए विचार करें* अनुभाग में विद्यार्थियों को यह सोचने के लिए प्रेरित किया गया

है कि *''जलाशय के इस प्रकार के निमार्ण के लिए आवश्यक श्रमिकों की बड़ी संख्या के बारे में सोचिए। आपके विचार से उनके कार्य को सुनियोजित करने के लिए निश्चित निर्देश किसने दिए होंगे? आपके विचार में उन्हें उनकी मजदूरी के लिए भुगतान कैसे किया होगा? (संकेत-उस समय आज की तरह मुद्रा का प्रचलन नहीं था।)* चूंकि *समय-समय पर जलाशयों की सफाई करना आवश्यक था, इसलिए क्या उनके रख-रखाव के लिए कोई स्थानीय प्राधिकारी थे? इस नगर के शासक और नगर प्रशासन के बारे में इससे हमें क्या संकेत मिलते हैं? ''* अतः जब विद्यार्थिगण शिक्षक के साथ मिलकर उपरोक्त प्रश्नों पर विचार करेंगे, तो तत्कालीन सभ्यता में मजदूरी के साथ-साथ ठेकेदारी, आवश्यक सामग्री की व्यवस्था और उनकी उपलब्धता का स्थान, बाजार व अन्य व्यवसायों/रोजगारों के विषय में भी सोचेगें। चूंकि मुद्रा का प्रचलन नहीं था, तो मजदूरी के भुगतान की क्या व्यवस्था रही होगी। क्या उन्हें वस्तु-विनिमय के आधार पर ही भुगतान किया जाता होगा; और जलाशयों की साफ-सफाई के लिए वर्तमान की तरह ग्राम पंचायत, नगर पंचायत, नगर पालिका, महानगर पालिका अथवा नगर निगम जैसे निकाय अस्तित्व में रहे होंगे अथवा कोई ओर व्यवस्था रही होगी; इस प्रकार भी विचार कर सकेंगे। इस कक्षागत प्रक्रिया के दौरान विद्यार्थीगण तत्कालीन एवं वर्तमान संदर्भों का तुलनातमक विश्लेषण करेंगे, जिससे उनमें 21वीं शताब्दी के विश्लेषणात्मक कौशल का विकास होने की प्रबल सम्भावनाऐं उत्पन्न होंगी।

आइए विचार करें

जलाशयों के इस प्रकार के निर्माण के लिए आवश्यक श्रमिकों की बड़ी संख्या के बारे में सोचिए। आपके विचार से उनके कार्य को सुनियोजित करने के लिए, निश्चित निर्देश किसने दिए होंगे? आपके विचार में उन्हें उनकी मजदूरी के लिए भुगतान कैसे किया गया होगा? (संकेत – उस समय आज की तरह मुद्रा का प्रचलन नहीं था।) चूँकि समय-समय पर जलाशयों की सफाई करना आवश्यक था, इसलिए क्या उनके रख-रखाव के लिए कोई स्थानीय प्राधिकारी थे? इस नगर के शासक और नगर प्रशासन के बारे में इससे हमें क्या संकेत मिलते हैं?

कल्पना कीजिए और अपने शिक्षक के साथ चर्चा कीजिए। पुरातत्ववेत्ता भी इन प्रश्नों के बारे में चर्चा करते हैं और उनके उत्तर सदैव निर्णायक नहीं होते।

हड़प्पावासी क्या खाते थे?

हड़प्पावासियों ने अपनी अनेक बस्तियाँ बड़ी और छोटी नदियों के किनारे बसाई थीं। यह सिर्फ जल स्रोतों तक आसानी से पहुँचने के लिए ही नहीं, बल्कि कृषि की दृष्टि से भी एक औचित्यपूर्ण विकल्प रहा होगा क्योंकि नदियाँ अपने आस-पास की भूमि को उपजाऊ बनाती हैं। पुरातात्विक खोजें यह दर्शाती हैं कि हड़प्पावासी दलहन और अनेक किस्म की सब्जियों के अतिरिक्त जौ, गेहूँ, कुछ मोटे अनाज, बाजरा और कभी-कभी धान जैसे अनाज की खेती करते थे। यूरेशिया में कपास उगाने में भी वे सर्वप्रथम थे, जिसका उपयोग वे कपड़ा बुनने में किया करते थे। उन्होंने हल सहित खेती के कई उपकरण बनाए (चित्र 6.9), जिनमें से कुछ का उपयोग आधुनिक समय में भी किसानों द्वारा किया जाता है।

अध्याय संख्या 07 *भारत की सांस्कृतिक जड़ें* के पृष्ठ संख्या 111-112 पर कठोपनिषद् से उद्धृत *नचिकेता और उसकी ज्ञान पिपासा* नामक एक दृष्टान्त दिया गया है। इस अध्याय में पृष्ठ संख्या 122 पर *कक्षा गतिविधि* अनुभाग में विद्यार्थियों से एक नाटक मंचन करने के निर्देश दिये गये हैं। जिसमें मृत्यु के देवता यम से अनके बच्चे नचिकेता के रूप में जीवन के बारे में प्रश्न पूछ रहे हैं। जब विद्यार्थीगण इस गतिविधि को करेंगे, तो इसे तीन चरणों में बांटकर समझा जा सकता है। सर्वप्रथम वें नाटक के लिए जीवन से जुड़े प्रश्नों पर आधारित

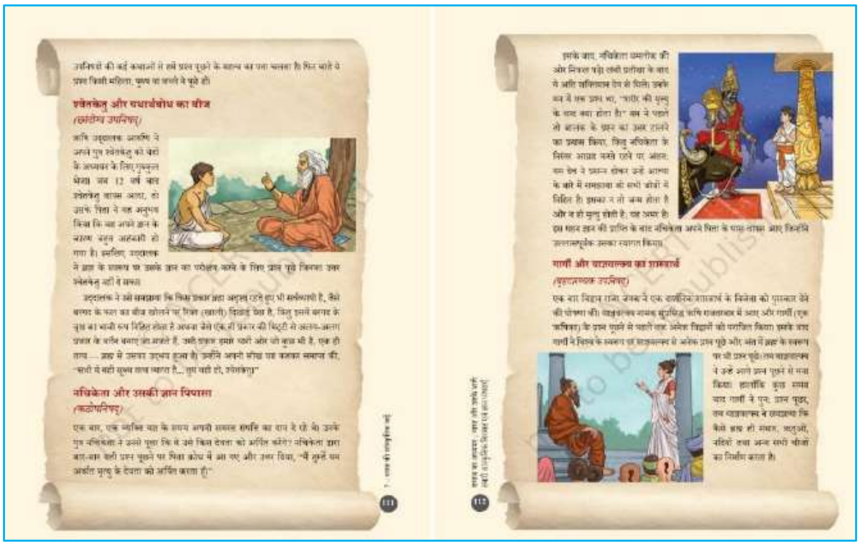
श्वेतकेतु और यथार्थबोध का बीज (छांदोग्य उपनिषद्)

नचिकेता और उसकी ज्ञान पिपासा (कठोपनिषद्)

गार्गी और याज्ञवल्क्य का शास्त्रार्थ (बृहदारण्यक उपनिषद्)

संवाद लिखेंगे तथा पात्रों का चयन करेंगे। फिर (दूसरे चरण में) वें नाटक से जुड़ी आवश्यकताओं की पूर्ति, यथा पात्रों के लिए वेशभूषा की व्यवस्था, स्थान एवं समय का चयन करेंगे। तैयारी पूर्ण होने के पश्चात् अंतिम चरण में वें *नचिकेता और उसकी ज्ञान पिपासा* पर नाटक का मंचन करेंगे। इस पूरी प्रक्रिया के दौरान संवाद-लेखन के प्रथम चरण के दौरान उन्हें सृजनात्मक कौशल का विकास करने के अवसर प्राप्त होंगे, द्वितीय चरण में नाटक के लिए सामग्री जुटाना आदि की व्यवस्था के दौरान उनमें आपसी तालमेल एवं सहयोग कौशल का विकास होने की संभावना है; वहीं तीसरे व अंतिम चरण में नाटक के मंचन के माध्यम से विद्यार्थियों को सम्प्रेषण कौशल का विकास करने के अवसर प्राप्त होंगे। इस प्रकार इस गतिविधि के माध्यम से विद्यार्थियों में 21वीं शताब्दी के सृजनात्मक, सहयोग एवं सम्प्रेषण कौशलों का विकास किया जा सकता है। इसी प्रकार अध्याय संख्या 9 *परिवार एवं समुदाय* में दी गई लघुकथा, जिसकी मुख्य पात्र शालिनी नामक बालिका है, के पश्चात् पृष्ठ संख्या 141 पर *आइए पता लगाएं* अनुभाग में पूछे गये प्रश्न '*यदि आप शालिनी की जगह होते तो क्या करते?* ' के माध्यम से विद्यार्थियों में सृजनात्मकता एवं विश्लेषणात्मकता जैसे कौशलों को विकसित किया जा सकता है। पुस्तक के एक और अध्याय अध्याय संख्या 11 *ग्रामीण क्षेत्रों में स्थनीय सरकार* के पृष्ठ संख्या 169 पर *बाल पंचायत* की एक कक्षागत् गतिविधि सुझाई गई है, जिसमें उन्हें ग्राम पंचायत की विभिन्न समस्याओं पर चर्चा एवं समाधान करने के निर्देश दिये गये हैं। यदि विद्यार्थीगण एकसाथ मिलकर गतिविधि को करें, तो उनमें विश्लेषणात्मकता, सम्प्रेषण एवं आपसी सहयोग जैसे कौशलों का विकास होने की प्रबल संभावनाएं है।

बहु-अनुशासनात्मक और अंतः-अनुशासनात्मक प्रकृति

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 के आलोक में तैयार की गई इस पाठ्यपुस्तक की विषयवस्तु की प्रकृति बहु-अनुशासनात्मक और अंतः-अनुशासनात्मक है। पाठ्यपुस्तक में दिये गये अध्यायों में इसके अनेक उदाहरण उपस्थित हैं। अध्याय संख्या 04 *इतिहास की समय-रेखा एवं उसके स्त्रोत* के पृष्ठ संख्या 60 पर एक समय-रेखा दी गई है, जिसके माध्यम से पृथ्वी पर जीवन के उद्भव एवं विकास के प्रमुख चरणों को दर्शाया गया है। यह समय-रेखा 4.54 अरब वर्ष पूर्व एक कोशिकाएं जीव के उद्भव से एक करोड़ वर्ष पूर्व के आदिमानव से होते हुए 6500 वर्ष पूर्व जब से मानव सभ्यता के लिखित प्रमाण प्राप्त है; तक प्रस्तुत की गई है। इसमें दर्शाया गया है कि किस प्रकार जीवन का प्रारम्भ एक कोशिकाएं जीव से हुआ और फिर जीवाणु में परिवर्तित हुआ; तत्पश्चात् क्रमशः स्पंज एवं कवक, प्रवाल, मछली कशेरूकी, उभयचर कीट, शार्क, सरीसर्प डायनासोर, पक्षी, स्तनपायी फूल एवं मधुमक्खियां, होमो सेपियंस एवं आदिमानव का विकास हुआ। इसी क्रम में अग्नि के आविष्कार एवं लेखन की शुरूआत को भी

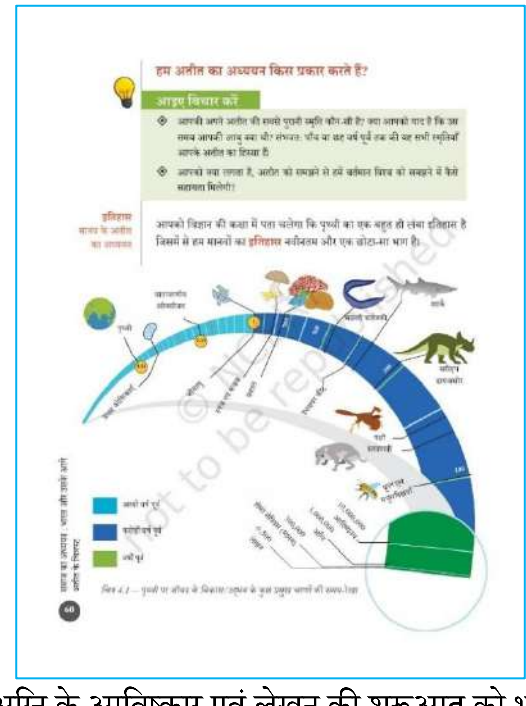

समय-रेखा पर इंगित किया गया है। वास्तव में जीवन का उदभव् मूलतः विज्ञान से जुड़ी विषयवस्तु है, जबकि मानव के क्रमिक विकास पर चर्चा एवं उसका समय-रेखा के द्वारा निरूपण इतिहास के क्षेत्र का विषय है। इस प्रकार इस अध्याय की विषयवस्तु की प्रकृति बहु-अनुशासनात्मक है। जबकि इसे कक्षा में पढ़ाते समय अन्य अनुशासनों यथा भूगोल, पर्यावरण विज्ञान आदि की अभिधारणाओं को भी संक्षेप में रखा जा सकता है। इस प्रकार इस विषयवस्तु को पढ़ाते समय कक्षा में बहु-अनुशासनात्मक उपागम के प्रयोग करने के अवसर उत्पन्न किये जा सकते हैं, जो अध्याय में विद्यार्थियों को समय-रेखा एवं इतिहास के अन्य श्रोतों से परिचय कराने के उद्देश्य की पूर्ण प्राप्ति के लिए आवश्यक है।

इसी अध्याय में पृष्ठ संख्या 74 पर दिये अनुभाग *प्रश्न, क्रियाकलाप एवं परियोजनाएं* में तिथियों के साथ कुछ अभ्यास प्रश्न हल करने के लिए दिये गये हैं। ये प्रश्न है-

- समय-रेखा पर निम्नलिखित तिथियों को कालक्रमानुसार लगाइए-323 सा.सं., 323 सा.सं.पू., 100 सा.सं., 100 सा.सं.पू., 1900 सा.सं.पू., 1090 सा.सं., 2024 सा.सं.
- यदि सम्राट चन्द्रगुप्त का जन्म् 320 सा.सं.पू. में हुआ तो बताइए उनका सम्बंध किस शताब्दी से था? उनका जन्म् बुद्ध के जन्म् से कितने वर्ष पश्चात् हुआ?
- झांसी की रानी का जन्म् 1828 सा.सं. में हुआ। उनका संबंध किस शताब्दी से है? उनका जन्म् भारत की स्वतंत्रता से कितने वर्ष पूर्व हुआ?
- ‘12000 वर्ष पूर्व को तिथि में बदलिए।

उपर्यक्त प्रश्नों को हल करते समय विद्यार्थीगण को इतिहास की तिथियों की जानकारी तो होगी ही, साथ ही उन्हें गणितीय कौशल का विकास करने के अवसर भी प्राप्त होंगे।

इसी प्रकार सामाजिक विज्ञान की इस पाठ्यपुस्तक के अध्याय संख्या 06 *भारतीय सभ्यता का प्रारम्भ* के पृष्ठ संख्या 95 पर *आइए पता लगाएं* अनुभाग के अन्तर्गत कक्षा की एक गतिविधि के रूप में विद्यार्थियों को उनकी कक्षा, विद्यालय के गलियारे व खेल के मैदान की लम्बाई मापने और धौलावीरा के सबसे विशाल जलाशय की लम्बाई से तुलना करने के निर्देश दिये गये हैं। विद्यार्थीगण जब इस गतिविधि को पूर्ण करेंगे तो उनमें मापन संबंधी कौशल का विकास तो होगा ही साथ ही धौलावीरा के जलाशय की वास्तविक लम्बाई की कल्पना करने में सहायता मिलेगी। इस बहु-अनुशासनात्मक उपागम के प्रयोग से विद्यार्थियों में तत्कालीन जलाशय की संकल्पना के प्रति समझ दृढ़ होगी।

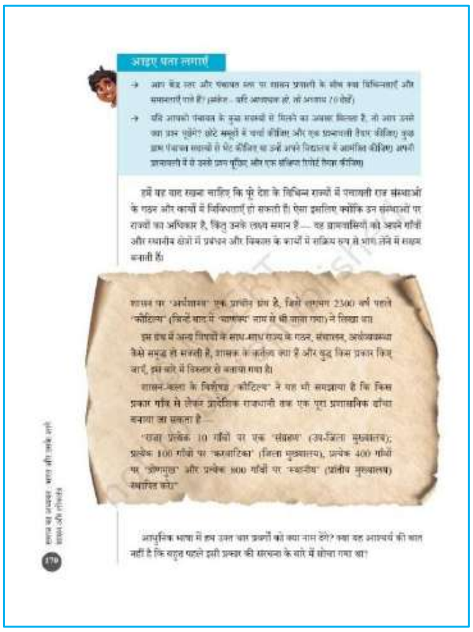
आइए पता लगाएं

अध्याय संख्या 11 *ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानीय सरकार* के पृष्ठ संख्या 170-171 पर *कौटिल्य के अर्थशास्त्र* से उद्धरण दिया गया है, जिसमें

गाँव से लेकर राजधानी तक के प्रशासनिक ढाँचे के विषय में बताया गया है। यह उद्धरण राजनीतिक विज्ञान के संप्रत्यय की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की समझ विकसित करने में सहायक है। इस अंतः-अनुशासनात्मक उपागम के प्रयोग से विद्यार्थी स्थानीय सरकार के इतिहास से अवगत होंगे और साथ ही वर्तमान संदर्भ में इस ज्ञान का प्रयोग भी कर पायेंगे।

इसी प्रकार अध्याय 14 *हमारे आस-पास की आर्थिक गतिविधियाँ* के अन्तर्गत आर्थिक गतिविधियों में आर्थिक क्षेत्रकों का वर्गीकरण (प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक) एवं उनमें परस्पर निर्भरता का वर्णन किया गया है। अर्थशास्त्र विषय से जुड़ी इन संकल्पनाओं की विद्यार्थियों में और स्पष्ट समझ विकसित करने की दृष्टि से पाठ में आगे पृष्ठ संख्या 202-205 पर *डेयरी सहकारिता-खेत से थाली तक* नामक शीर्षक के अंतर्गत गुजरात में स्थापित एक सहकारी संगठन आनंद मिल्क यूनियन लिमिटेड (अमूल) की विकास यात्रा को एक रोचक कहानी के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसमें बताया गया है कि सन् 1940 में जब गुजरात के आनंद जिला क्षेत्र के किसान अपने पशुओं का दूध बेचने जाया करते थे तो उन्हें किन-किन समस्याओं का सामना करना पड़ता था। वे मौसम की मार तो झेलते ही थे, कई बार बिचौलियों के कारण ठगा भी महसूस करते थे। इस समस्या को लेकर जब वे एकत्र होकर सरदार वल्लभ भाई पटेल के पास गये, तब उन्होंने किसानों को सहकारी संघ बनाने का सुझाव दिया। जिसके फलस्वरूप सन् 1946 में अधिवक्ता और स्वतंत्रता सेनानी त्रिभुवन दास पटेल एवं मुम्बई डेयरी कारखाने के इंजीनियर डॉ. वर्गीज कुरियन की सहायता से आनंद मिल्क यूनियन लिमिटेड (अमूल) की स्थापना की गई। अर्थशास्त्र की संकल्पनाओं- आर्थिक क्षेत्रकों (प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक) एवं उनमें परस्पर निर्भरता को बेहतर ढ़ंग से स्पष्ट करने के लिए उपरोक्त कहानी इतिहास के पन्नों से पाठ में उद्धृत की गई है, जो पाठ्यपुस्तक में प्रयुक्त किये गये अंतः-अनुशासनात्मक उपागम का उदाहरण है। इसी प्रकार पुस्तक में विभिन्न संकल्पनाओं को उसके मूल विषय के साथ अन्य विषयों के संदर्भ को भी जानने के अवसर दिये गये हैं, जो विभिन्न विषयों की समग्र समझ विकसित करने में उपयोगी है।

पाठ्यपुस्तक का समग्र गठन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं विद्यालयी शिक्षा के लिए पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF-SE) 2023 के अनुपालन में तैयार की गई इस पाठ्यपुस्तक में कुछ ऐसी पहल की गई हैं, जो नयापन लिए हुए हैं। इस पाठ्यपुस्तक के प्रत्येक अध्याय का आरंभ किसी न किसी प्रसिद्ध सूक्ति अथवा श्लोक से किया गया है, ये दीगर है कि इन सूक्तियों को समझने व उनका अर्थ जानने के दबाव से विद्यार्थियों को मुक्त रखा गया है। यें सूक्तियां मुख्यतः भारतीय विद्वानों, दार्शनिकों, वेद, उपनिषदों, एवं महाभारत आदि प्राचीन ग्रंथो से उद्धृत हैं। जिससे स्पष्ट होता है कि यह पुस्तक भारतीय ज्ञान परम्परा की संवाहक है। इसके साथ ही प्रत्येक अध्याय के प्रारम्भ में उस अध्याय की विषयवस्तु से

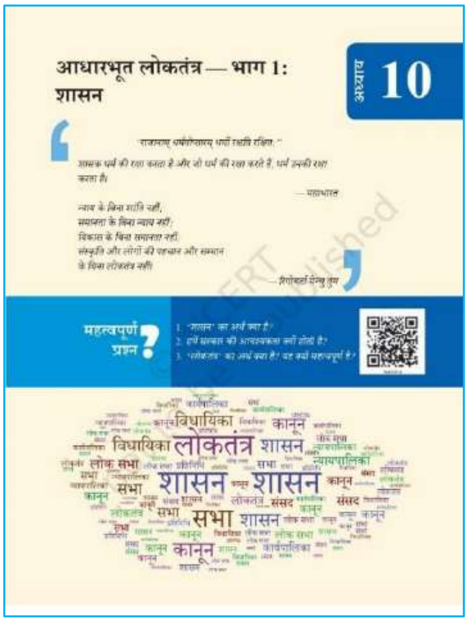

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)

संदर्भित चित्र भी प्रकाशित किया गए है, जो विद्यार्थियों में विषयवस्तु के प्रति रुचि उत्पन्न करने व उन्हें पाठ को पढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं।

इस पाठ्यपुस्तक में अध्यायों के मध्य एवं अन्त में कुछ अनुभाग दिए गये हैं- यथा '*महत्वपूर्ण प्रश्न, आइये पता लगाएँ, आइये विचार करें, ध्यान रखें व आगे बढ़ने से पहले* '। इनमें से कुछ अनुभागों को न केवल पढ़कर बल्कि उनके साथ दिये गये विशिष्ट क्लिप आर्ट के माध्यम से भी उन्हें पहचाना जा सकता है। इन अनुभागों के साथ जो छोटे-छोटे प्रतीक चिह्न दिए गये हैं, वे विद्यार्थियों को पाठ से लगातार जोड़े रखनें में सहायक हैं। इसके साथ ही प्रत्येक अध्याय के अंत में '*आगे बढ़ने से पहले* ' अनुभाग के अंतर्गत पाठ का सारांश दिया गया है, जो पढ़े हुए संप्रत्यय को दोहराने और संप्रत्ययों की समझ को सुदृढ़ करने में सहायक है। कुछ अध्यायों की समाप्ति होने पर विद्यार्थियों को अध्याय से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं को लिखने के लिए *नूडल्स* शीर्षक के अन्तर्गत एक रिक्त पृष्ठ भी दिए गए है।

निष्कर्ष

इस पाठ्यपुस्तक की विषयवस्तु प्रासंगिक ज्ञान और क्षमताओं को विकसित करने में सक्षम है, जिसके लिए इसमें सत्यापित साक्ष्यों एवं आख्यानों का प्रयोग किया गया है। विषयवस्तु को तैयार करने में अंतः-अनुशासनसत्मक एवं बहु-अनुशासनात्मक उपागमों का प्रयोग किया गया है। पाठों का विकास सरल से कठिन की ओर सिद्धान्त पर आधारित है तथा विषयवस्तु की संकल्पना को यथा संभव स्थानीय संदर्भ के साथ शुरू किया गया है; तत्पश्चात् क्रमशः क्षेत्रीय, राष्ट्रीय एवं वैश्विक संदर्भों की चर्चा की गई है। विषयवस्तु से जुड़ी संकल्पनाओं को बेहतर ढ़ंग से प्रस्तुत करने के लिए व्यक्तियों के वास्तविक एवं विविध अनुभवों को शामिल किया गया है, साथ ही संकल्पनाओं को बहुविध ढंग से प्रस्तुत किया गया है। इस पाठ्यपुस्तक में दी गई विषयवस्तु विद्यार्थियों की क्षमताओं को विकसित करने में सक्षम प्रतीत होती ही है; साथ ही उनमें मूल्यों के विकास एवं उनके उचित दृष्टिकोण के विकास में भी सहायक हो सकती है। निष्कर्षतः कक्षा 6 के लिए सामाजिक विज्ञान विषय की पाठ्यपुस्तक *समाज का अध्ययनः भारत और उसके आगे* राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर अधारित विद्यालयी शिक्षा के लिए पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 में सुझाए गये सिद्धान्तों के आधार तैयार की गई है, जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में संकल्पित सवैंधानिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों से परिपूर्ण नागरिक के निमार्ण-प्रक्रिया के प्राथमिक चरण का आवश्यक स्रोत सिद्ध हो सकती है।

संदर्भ

1. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।
2. *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF-SE) 2023*, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।
3. *समाज का अध्ययनः भारत और उसके आगे* (2024), सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तक, कक्षा 6, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।